letter2:letter1.qxd 9/26/2010 8:42 PM Page 116

मिलकर काम करने के लिए राजी किया। प्रयोग सफल हुए। परिणामस्वरूप, ऐसे गांवों में जहां पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं था, वहां भी सबके खेतों की सिंचाई संभव हुई। निराशाग्रस्त किसानों के जीवन में सिंचाई के प्रबंध के कारण खुशहाली के दिन दिखाई देने लगे। वर्षा के भरोसे जहां एक फसल भी ठीक से उगाना अनिश्चित था, वहां सिंचाई के प्रबंध के कारण सभी किसान आराम से साल में दो फसलें उगाने लगे हैं। सभी ग्रामवासियों द्वारा मिलकर काम करने का लाभ ग्रामवासियों को दिखाई देने लगा है।

हर गांव के ग्रामवासियों के मुकदमें कचहरियों में चल रहे थे। आपसी अनबन से सबका मिलकर काम करना कठिन था। दीनदयाल शोध संस्थान के ''समाजशिल्पी दम्पतियों'' ने गांव के बुजुर्गों द्वारा ग्रामवासियों को समझाया कि मुकदमों में लगे रहने से जनजीवन में तरक्की संभव नहीं है। अतः आपस में मिल बैठकर हम आपसी विवादों को सुलझा लें। एक बार जब सभी विवाद सुलझा लिए जाएंगें, तब उन सिंचाई परियोजनाओं पर मिलकर काम करना संभव होगा, जिनसे सभी ग्रामवासियों को लाभ होगा।

गांव के लोगों को बुजुर्गों की सलाह जंच गई। गांवों में होड़ लग गई कि हम अपने गांव को विवादमुक्त बनाएंगे। परिणामस्वरूप, अभी तक चित्रकूट के चारों ओर के 80 गांव विवादमुक्त हुए हैं। गांव के लोगों ने सर्वसम्मति से तय किया है कि हम अपना विवाद लेकर अब कचहरी में नहीं जाएंगे, आपस में ही मिल बैठकर सुलझा लेंगे। गांवों में फैली मुकदमेबाजी की सालों से चली आ रही महामारी से मुक्ति पाने का मार्ग सुलभ हो गया है। सन् 2010 तक चित्रकूट के चारों ओर के 500 गांव इसी रूप में विकसित होंगे।

शुभाकांक्षी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

अभी तक चित्रकूट के चारों ओर के 80 गांव विवादमुक्त हुए हैं। गांव के लोगों ने तय किया है कि वे अपना विवाद लेकर अब कचहरी में नहीं जाएंगे, आपस में ही मिल-बैठ कर सुलझा लेंगे।

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

24 अगस्त, 2005

साधारण से लेकिन शिक्षित कार्यकर्ताओं (युवक-युवतियों) ने स्थानीय ग्रामवासियों से स्वावलंबन के आधार पर सामूहिक प्रयासों द्वारा ग्रामों के चतुर्दिक विकास का कार्य कर दिखाया है। चित्रकूट क्षेत्र के अतिपिछड़े और उपेक्षित गांवों के निवासी खुशहाली के दिन देखने लगे हैं। इस अनुभव से स्पष्ट है कि अगर स्वतंत्रता पाते ही युवाओं को छह लाख गांवों के विकास के लिए प्रेरित किया जाता तो आज हमारे दुर्दशाग्रस्त गांव देश के भविष्य-निर्माण में आधार-स्तंभ के रूप में काम आते। इस मूलभूत कार्य की सर्वथा उपेक्षा की गई है।

परिणामस्वरूप -

(1) देश के करोड़ों नागरिकों को दरिद्रता की असह्य यातनाएं सहनी पड़ रही हैं। असंख्य युवजन बेकारी के कारण दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनमें से अनेक अपराध जगत में शामिल होने के लिए मजबूर हैं। देश की यह मूलतः सकारात्मक युवा-शक्ति दिशाहीन बनी है।

(2) राजनेताओं का ग्रामों से संबंध टूट गया है। कांग्रेस जैसा ऐतिहासिक और देशव्यापी दल भी अपना अखिल भारतीय अस्तित्व खो बैठा है।

(3) जातीय, मजहबी एवं क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर राजनीतिक दल अधिक बलशाली बन रहे हैं। ऐसे संकुचित मानसिकता वाले दलों के सहयोग के बिना राष्ट्रीय सरकार का गठन असंभव हुआ है। इस कारण, मिली-जुली केन्द्रीय सरकारें राष्ट्रीय हित में काम करने में असमर्थ हुई हैं। यह अवस्था देश को टुकड़ों-टुकड़ों में बांटने की संभावना बढ़ा रही है। इस खतरनाक अवस्था से देश को बचाने का प्रयास करने के बजाए चोटी के नेता अपना व्यक्तिगत वर्चस्व प्रस्थापित करने के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं। यह देखकर केवल आम लोग ही नहीं इन नेताओं के अनुयायी भी निराश हो रहे हैं।

अपना देश और समाज बहुत पुराना है। अनेक बार वह अधोगति का शिकार बना था। ऐसी अवस्था में नई पीढ़ी ने ही उसे उन्नति की राह पर ला खड़ा किया था। आज फिर से नई-पीढ़ी को ही वह दायित्व निभाना होगा।

स्वतंत्र भारत में अपनाई गई शिक्षा-पद्धति नई-पीढ़ी को देशभक्ति और समाज-निष्ठा से पूर्णतः वंचित कर रही है। सुशिक्षित कहलाने वाले परिवारों में भी जन्म पाने वाली संतान सामाजिक दायित्व की प्रेरणा नहीं पाती। सभी प्रकार के उच्चस्तरीय लोगों की जीवन-शैली से स्वार्थसिद्धि के ही पाठ पढ़ने को मिल रहे हैं। अतः नवशिक्षित वर्ग देश और समाज की उन्नति का विचार तक नहीं करता।

वर्तमान नेतृत्व नहीं, बढ़ रही दुर्दशा ही नई पीढ़ी को अपना दायित्व समझाने का काम कर रही है। जनजीवन की विपदा देखकर और बेकारी की निरंतर बढ़ रही विभीषिका से त्रस्त होकर युवा-वर्ग बहुत बेचैन है। वह नई राह की खोज में हैं। संपर्क करने पर उसे दीनदयाल शोध संस्थान के कार्य की दिशा पसंद आ रही है। वह समझने लगा है कि ग्रामीण विकास के बिना आम लोगों का जीवन सुधर नहीं सकता। फलस्वरूप, नवविवाहित होकर भी पति-पत्नी के उच्च शिक्षा प्राप्त जोड़े ग्रामीण अंचल में काम करने के लिए राजी हो रहे हैं।

भारत की चिरजीवी एवं गतिशील सभ्यता तथा संस्कृति ग्रामीण अंचल में ही विकसित हुई है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की अवधारणा वहीं प्रस्फुटित हुई थी।

अनंत काल से चली आ रही अपनी अखण्ड परंपरा बहुत समृद्धिशाली है। उसमें से अनेक बातें

अगर स्वतंत्रता पाते ही युवाओं को छह लाख गांवों के विकास के लिए प्रेरित किया जाता तो आज हमारे दुर्दशाग्रस्त गांव देश के भविष्य-निर्माण में आधार स्तंभ के रूप में काम आते।